झारखण्ड सरकार

IFAD
Investing in rural people

बरबट्टी

शीर्षक/कार्य : बरबट्टी खेती और नई संभावनाएँ

समूह का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
रानी स्वयं सहायता समूह	कबडा	मोती पहाड़ी	बोरियो	साहेबगंज

01 पुर्व की स्थिति

बरबट्टी की खेती यहाँ के लोगों के लिए मुख्य सब्जी ही नहीं है बल्कि ये खेती यहाँ के लोगो के पूर्वज से होतो आ रहा है स ये फसल यहाँ मुख्य सब्जी के रोप में उगाया जाता है एव बेचा और खाया जाता है। ये खेती यहाँ के लोगो के लिए मुख्य आजीविकाओं में से एक है। यहाँ के लोग ये खेती पहाड़ पर करते हैं और एक बार फसल तैयार होने पर फिर तीन वर्ष बाद ही उस स्थान पर खेती होती है स खेती के लिए पैसे के आभाव में यहाँ के लोग महाजन से उधर लेते थे तथा आधुनिक खेती के तरीके व जानकारी के आभाव में खेती की पैदावार जितनी होनी चाहिए उतना नहीं होती थे स यहाँ के लोगो को एक ओर जहाँ महाजन से उधर और सूद भरने से समस्या थी वहीँ फसल अच्छा नहीं होने की स्थिति में तो कमर ही टूट जाति थी।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

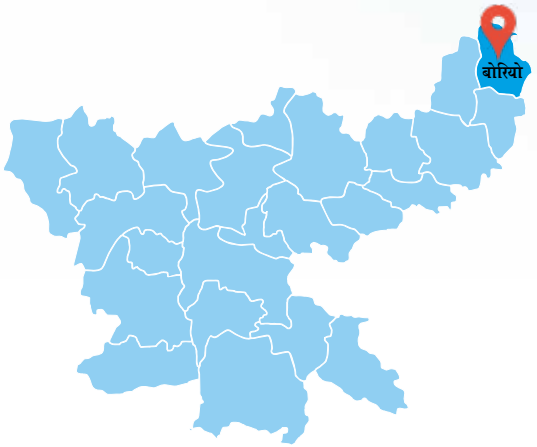

झारखंड आदिवासी सशक्तिकरण एवं आजीविका परियोजना का संचालन बोरियो प्रखण्ड के 5 पंचायत के 55 गांव में मार्च, 2015 से एफ़एनजीओ सिटीजन्स फाउंडेशन संस्था के द्वारा किया जा रहा है स इसी क्रम में इस गाँव में परियोजन के मदद से बरबट्टी के खेती का पूर्ण अध्ययन कर समूह माध्यम से खेती को और बेहतर बनाने का कार्य किया गया जैसे बीज सम्बन्धी समस्या, विभिन्न रोग एव फसल को तैयार करने सम्बन्धी समस्या के बारे में जानकारी देकर एव सहायता कर खेती को बेहतर बनाने का कार्य किया गया। खेती में लाभ को बढ़ने एव सहायतार्थ फलदार वृक्ष, गोबर खाद, बरबट्टी सहायता राशि एव समय–समय प्रशिक्षण कार सभी बरबट्टी खेतिहर को अच्छे खेती के लिए सहायता की गई।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

इस परियोजना के माध्यम से सबसे बार परिवर्तन यहाँ के लोगों के सोच में आई जो लोग यह मानते थे की जो हो रहा है उससे बेहतर करना बहुत कठिन व महंगा होगा, यह भ्रान्ति टूटी स लोगों के लगत कम हो गाय और आने वाले समय में ये सभी अपने पारंपरिक व सब से महत्वपूर्ण फसल को और अछ से करेंगे एव आजीविका के रूप में इस फसल को और बेहतर व ब्यापक रूप से किया जायगा। वर्तमान समय में बरबट्टी का बाजार मूल्य दृ 44 से 49 के बीच मिल जाता है स जहाँ पूरब में प्रति बीघा 30 से 45 ाह हुआ करता था आज प्रति बीघा 65 से 70 ाह तक देखा जा रहा है। हम यहाँ एक मति पहाड़ी पंचायत के काबडा गाँव के लाभुक का फोटो दे रहे हैं इसमे लाभुका तैयार खेत में है और फसल तोरे जा रहे हैं।

शीर्षक/कार्य : बरबट्टी की खेती

लाभार्थी का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
सुरजा पहाड़िया	अंगवाली	चन्दना	सुन्दरपहाड़ी	गोड्डा

01 पुर्व की स्थिति

सुरजा पहाड़िया सुन्दरपहाड़ी प्रखंड के गांव अंगवाली में रहते हैं इस परिवार में कुल 4 सदस्य हैं जिसमें से तीन विधवा हैं और उनके बच्चे चार हैं। वो बरबटी की खेती पहले भी करते थे लेकिन कम मात्रा में करते थे और परिवार में महाजन से बीज या पैसा चन्दना के हटिया से महाजन से लेते थे जिसका कि जितना बीज लेते थे उसका दुगुना और जितना पैसा लेते थे उतने राशि का दुगुना देना होता था। कभी खेती ठीक होता था तो कभी ठीक नहीं भी हो पाता था और जो पहाड़ मे बड़ी मात्रा में आठ सौ से एक हजार बन्दर आते है एवं चुहा बरबटी का नुकसान करते हैं जिसके कारण महाजन को दुगुना पैसा देना ही पड़ता था जिसके कारण उनका फायदा नहीं होता था और हर साल महाजन से फँस जाते थे साथ ही बीज नहीं बचा पाते थे। इसके करण परिवार को चलाना मुश्किल हो जाता था। हमलोग बरबटी के उपज को लोग उबालकर खाते है और उसको सुखा कर दाल बनाकर सभी सब्जी मे मिला कर खाते हैं और जो बाकी बच जाता है उसको बाजार के चंदना हटिया मे स्थानीय बाजार में बेचते हैं।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

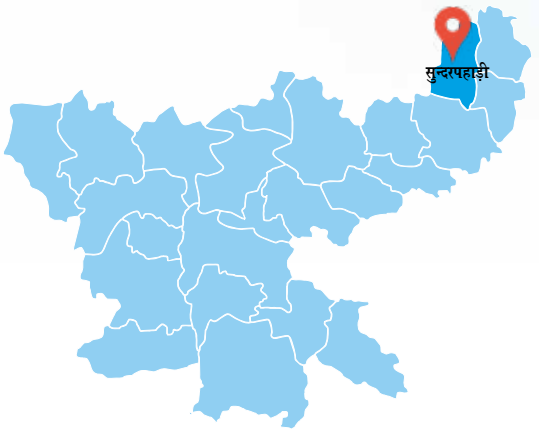

सुरजा पहाड़िया से बात करते हुए उसका कहना है कि इस गांव में पहली बार पहले दो बीघा में खेती करते थे लेकिन जे–टी–डी–एस आने के बाद यहां ग्राम सभा का बैठक हुआ और उसमे गांवो वालों का कहना है कि कोई सहायोग नहीं करेगा और ये सब योजना से कोई फायदा नही होगा लेकिन ग्राम सभा की बैठक करने के बाद सभी परिवार को इस योजना के बारे में बताया गया और उसकी सुची बनायी गयी। सभी को समय में बीज और कटाई का कुल 9,000 रूपया मिल गया और में अभी तीन बीघा में खेती कर रहा हुँ। पिछले साल में हम 40 पैला हम बीज महाजन से लिए थे और उसमें उनको 80 पैला महाजन को देना पड़ा लेकिन इस साल में बरबटी के खेती के लिए 60 पैला तीन बीघा में खेती किये हैं अभी तक बरबटी की कटाई पुरी नहीं हुआ है इसलिए अभी तक कितना फायदा हुआ है ये कुछ दिनों के बाद पता होगा। इस साल मौसम अच्छा था जिसके कारण उपज अच्छा हुआ है। जे–टी–डी–एस के सहायोग से महाजन के पास नहीं जाना पड़ रहा है और महाजन का शोषण समाप्त हो गया। अभी हमलोग खुद की मालिक बन गये हैं।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

बरबटी की खेती के बाद उनका कहना है कि भविष्य में कभी भी महाजन के पास नही जाऐंगे। अपना इस साल का जो उपज है उसको अगले साल के बीज के लिए बीज बचा कर रखेंगें और जो पुंजी बच जाएगा उससे परिवार मे अच्छा कपड़ा एवं बर्तन खरीदेंगें। हर बार चन्दना हटिया में बरबटी का दर एक पैला में 16 रूपया मिलता है लेकिन योजना है कि और बजार जहां ज्यादा दर में बरबटी मिलेगा वहां भी बेचेगें।

शीर्षक/कार्य : बरबट्टी की खेती

लाभार्थी का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
रमेश पहाड़िया	अंगवाली	चन्दना	सुन्दरपहाड़ी	गोड्डा

01 पुर्व की स्थिति

सुन्दरपहाड़ी प्रखण्ड के गांव अंगवाली मे 46 परिवार जो पहाड़िया है वो बरबटी की खेती करते है। इस गांव के सभी परिवार बहुत पहले से ही बरबटी की खेती करते थे लेकिन कम मात्रा मे करते थे। बरबटी की खेती के लिए गरीबी के कारण इसके पुंजी के लिए महाजन से पैसा लेते थे और खेती का आधा से ज्यादा उपज को महाजन को दे देते थे जिसके कारण वो लोग गरीब से गरीब होते जा रहे थे। बरबटी के उपज को लोग उबालकर खाते है और उसको सुखा कर दाल बनाकर सभी सब्जी में मिला कर खाते है और जो बाकी बच जाता है उसको बाजार के चंदना हटिया मे स्थानीय बाजार में बेचते हैं।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

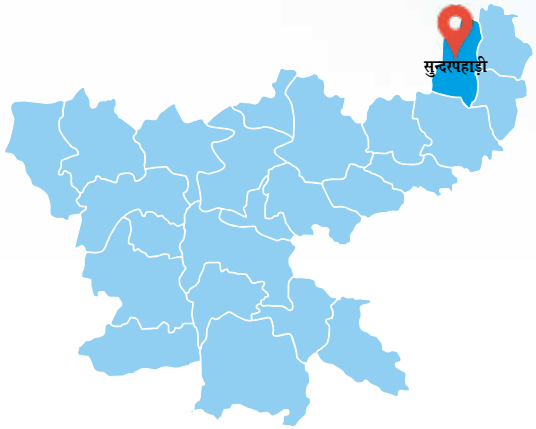

रमेश पहाड़िया के परिवार मे कुल 4 सदस्य हैं उनसे बात करते हुए उसका कहना है कि इस गांव मे पहली बार पहले दो बीघा में खेती करते थे लेकिन जे.टी.डी.एस से गांव मे ही योजना बनायी गयी और सभी को समय मे बीज और कटाई का कुल 9,000 रूपया मिल गया और मै अभी तीन बीघा मे खेती कर रहा हुँ। पिछले साल मे हम 40 पैला हम बीज महाजन से लिए थे और उसमे उनको 80 पैला महाजन को देना पड़ा लेकिन इस साल मे बरबटी के खेती के लिए मौसम अच्छा था जिसके कारण उपज अच्छा हुआ है। इस साल महाजन के पास नहीं जाना पड़ा है और गांव मे ही हमको ससमय बीज मिल गया पहले महाजन बहुत शोषण करते थे लेकिन अभी हमलोग खुद की मालिक बन गये हैं। इस साल का जो उपज होगा वो महाजन को नहीं देना पड़ेगा और हमलोग खुद खेती करके अपना फायदा लेंगें लेकिन बरबटी मे ये परेशानी है कि पहाड़ में पुरे आठ सौ से एक हजार की संख्या मे बंदर एवं जंगली सुअर, कीड़ा के कारण उपज कम हो जाता है और इसको बचाने के लिए जब बरबटी पकता है तो परिवार को लोग पहाड़ मे बैठकर ही उनका भगाना पड़ता है।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

रमेश पहाड़िया का कहना है कि इस बार जो बरबटी की खेती जो ज्यादा एरिया मे किये हैं और ज्यादा उपज हो रहा है तो जितना मात्रा मे बीज महाजन से लेते थे अब हम उपज को बीज के लिए बचा के रखेंगें और बाकी को धर मे खाएंगें और बरबटी को उबाल करके साथ ही पीस करके बड़ी बनायेंगें और पुरे वर्ष बरबटी भी खाऐंगे, और अभी तक हमलोग स्थानीय बाजार मे बरबटी बेचते थे लेकिन पुरे गांवो वाले मिलकर दुसरे गावं को जहां ज्यादा फायदा मिलेगा वही पर जा करके इसे बेचेगें। इस बात मे सबसे खुशी की बात यह है कि महाजन से छुटकारा मिल गया। और अब कभी भी महाजन के पास नही जायेंगे।

शीर्षक/कार्य : बरबट्टी की खेती

लाभार्थी का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
लक्षिण पहाड़िन	रतनापाड़ा	बड़ा सिन्दरी	सुन्दरपहाड़ी	गोड्डा

01 पुर्व की स्थिति

सुन्दरपहाडी प्रखण्ड से 15 किलोमीटर की दुरी मे पंचायत बड़ा सिन्दरी के गांव रतनापाड़ा मे 27 परिवार है। लक्षिण पहाड़िन का कहना है कि पहले रतनापाड़ा गांव मे कोई भी नही आते थे जिससे कोई भी योजना नही मिलता था। गांव मे बाजरा, मकई, सुतरी, बरबटी की खेती करते थे लेकिन कम मात्रा मे करते थे क्योंकि इनका जमीन बहुत कम है। पहाड़िया गुन के कारण मे ज्यादा खेती बरबटी का ही करते थे और उनका आजिविका पहाड़ से ही होता था लेकिन पहाड़ मे एक परेशानी है कि वहां पर जंगली सुअर, बन्दर, एवं जंगली किड़ा बहुत मात्रा मे फसल को नुकसान करते थे। गरीबी के कारण खेती के पुंजी के लिए महाजन के पास जाना पड़ता था और इतना मेहनत करके जो भी उपज निकलता था उसको महाजन को ही देना पड़ता था जिसके कारण महाजन अमीर बन रहे थे और हमलोग गरीब से गरीब हो रहे थे।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

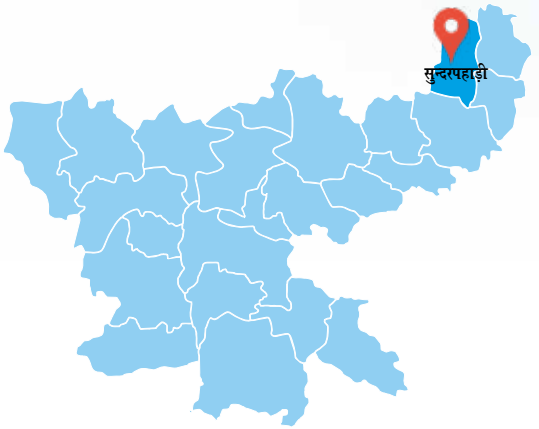

लक्षिण पहाड़िन बरबटी के खेती के लिए पिछले साल सभी परिवार को 9,000 मिला था और इस साल 5,000 की राशि जे.टी.डी.एस के सहयोग से मिला था साथ ही अरहर, मकई, बाजरा का बीज का सहयोग मिला था। पहले उनलोग दो बीघा मे ही खेती करते थे क्योंकि महाजन से सुद लेना पड़ता था लेकिन जे.टी.डी.एस के सहयोग से तीन से चार बीधा मे पुरे पहाड़ मे खेती कर रहे है। पिछले साल खेती से हमको जो बरबटी को बेच करके जो पैसा मिला था उस पैसे से दो बच्चे को चन्दना स्कुल हौस्टल मे रखकर पढ़ा रहे है उसको 7,000 फिस दिये थे एवं धर मे बर्तन एवं बच्चो के लिए कपड़ा खरीदे थे। धर मे खाने के लिए चावल खरीदे पहले हमलोग दाल नही खाते थे लेकिन आज कल हमलोग दाल भी खा रहे है। महाजन के पास अब नही जाना पड़ रहा है और पुरा खेती अपनी पुंजी से कर रहे हैं।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

लक्षिण पहाड़िन का भविष्य योजना है कि मैं अपने बच्चो को पढाउंगा एवं सभी बच्चो के लिए कपड़ा खरीदेंगें और अपने परिवार के लिए एक मिट्टी का एक धर बनायेंगें एवं भविष्य मे कभी भी महाजन के पास नही जायेगें। जो भी खेती हमलोग पहाड़ मे कर रहे है सभी का बीज भण्डारण करके ज्यादा एरिया मे खेती करेगें और अपने परिवार को स्वावलम्बी बनायेगें।

शीर्षक/कार्य : बरबट्टी खेती और नई संभावनाएँ

लाभार्थी का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
शांती मालतो	रतनापाड़ा	बड़ा सिन्दरी	सुन्दरपहाड़ी	गोड्डा

01 पुर्व की स्थिति

प्रखण्ड सुन्दरपहाड़ी पंचायत बड़ा सिन्दरी के गांव रतनापाड़ा मे करीब 27 परिवार जो कि शांती मातलो, पहाड़िया है जो बरबटी की खेती करते है। इस गांव मे पिछले साल भी बरबटी खेती के लिए जे.टी.डी.एस का सहायोग मिला था। जे.टी.डी. एस से पहले यहां भी बरबटी की खेती करते थे और पहले चन्दना हटिया से महाजन से बीज या पैसा लेते थे और दुगुना राशि देना होता था जिसके कारण महाजन के चक्र मे फँस जाते थे। परिवार मे ज्यादा बचत नही कर पाते थे और बीज नही बचा पाते थे एवं प्रत्येक साल इसी चक्र मे फस जाते थे। इस गांव मे सभी लोग मकई और अरहर, सुतरी एवं बाजरा की भी खेती करते थे लेकिन कम मात्रा मे करते थे। सरकार से पहाड़िया लोग के लिए एक परिवार के लिए कम्बल मिलता था लेकिन इसमे पुरे परिवार के लिए यह नही हो पाता था।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

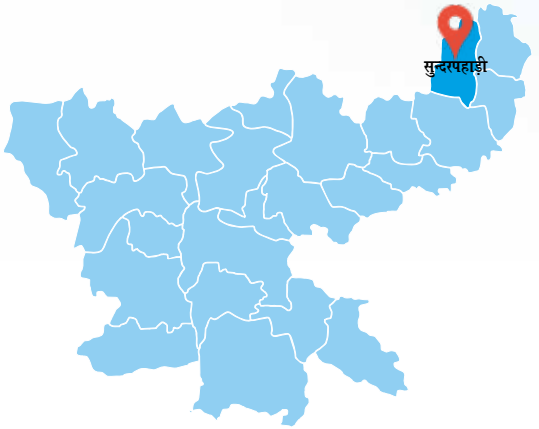

शांती मालतो का कहना है कि इस साल और पिछले साल भी जे.टी.डी.एस का सहयोग मिला था बरबटी की सफाई के लिए, बीज के लिए एवं कटाई के लिए कुल 9,000 राशि मिला था लेकिन इस साल उसके लिए कुल 500 रूपये की राशि मिला था। पिछले साल का बीज को जो हमलोग रखे हुए थे उसी बीज के तहत बरबटी की खेती किये जिससे की महाजन के पास नही जाना पड़ा। अपने बीज से ही तीन बीघा में खेती किये जिससे हमलोगों का बरबटी की खेती का एरिया बढ़ गया। पहाड़िया गांव मे पहाड़ियो के लिए मकई, बाजरा, अरहर, का भी सहायोग मिला जिससे ज्यादा मात्रा मे खेती किये। पिछले साल जो फायदा हुआ था उससे अपने परिवार के लिए बर्तन खरीदे एवं बच्चो के लिए कपड़े खरीदे और अपना छत को ठीक करवाये। उसका कहना है कि जे.टी.डी.एस का सहयोग से पुरे परिवार के लोग खुशी है और परिवार मे पुंजी बच रहा है और कुछ अच्छा भोजन की खा रहे है। अभी तक बरबटी की कटाई पुरा नही हुआ है इसलिए अभी तक कितना फायदा हुआ है ये कुछ दिनों के बाद पता होगा। जे.टी.डी.एस के सहायोग से महाजन के पास नही जाना पड़ रहा है और महाजन का शोषण समाप्त हो गया। अभी हमलोग खुद की मालिक बन गये है। पिछले साल भी हमलोग महाजन के पास नही गये और इस साल भी महाजन के पास नही गये पहले महाजन बहुंत बेइज्जत करके समान देते थे और बहुत धमकी करते थे लेकिन अब हमलोगों को महाजन का बात नही सुनना पड़ता है और हमलोग हटिया मे सिर उठा कर जाते हैं।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

पिछले और इस साल मे हमलोग के धर मे पुंजी बच गयी है जिससे हम अपने बच्चो को पढ़ायेंगें और गहना खरीदेंगें और अगले साल के लिए भी बीज रखेगें एवं जे.टी.डी.एस के नहीं रहने पर भी हमलोग खुद खेती करेंगें साथ ही महजान के चक्र में कभी नहीं फसेंगें।

शीर्षक/कार्य : बरबट्टी की खेती

लाभार्थी का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
विशु पुजहर	तालदंगाल	कोला रकोंदा	मसलिया	दुमका

01 पुर्व की स्थिति

झारखण्ड के दुमका जिला के मसलिया प्रखंड के कोलार्कोंदा पंचायत के अन्तर्गत ग्राम तालदंगाल में विशु पुजहर उम्र–29 वर्ष अपने पत्नी एवं तीन बच्चों के साथ पहाड़ की तलहट्टी में निवास करता है। विशु पुजहर एवं उसकी पत्नी पहाड़ की तराई में थोड़ी बहुत मकई की खेती करता एवं सालों भर मजदूरी कर अपने एवं परिवार का भरण–पोषण करता था। उसकी पत्नी जंगल से सूखा जलावन की लकड़ी काट कर लाती जिसे वह व्यापारियों को बहुत ही कम दाम में बेचकर कुछ पैसा इकट्ठा करती। कुल मिलाकर उसके परिवार का गुजर–बसर बहुत ही मुश्किलों भरा था प्रत्येक वर्ष के जुलाई माह में अक्सर विशु स्थानीय महाजन से पांच से छह हज़ार ऋण लेकर करीब 1 से 15 बीघा क्षेत्र में बरबट्टी की खेती करता, जिससे लगभग डेढ़ से 2 क्विंटल वह ऊपज प्राप्त कर पाता, लेकिन प्राप्त ऊपज का अधिकांश हिस्सा महाजन से लिए ऋण एवं उसके सूद के बदले चुकाने में ही चला जाता, मुश्किल से उसके पास ४० से ५० किलो ऊपज बचता जिसे वह स्वयं के खाने में उपयोग करता था।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

वर्ष २०१८ में "जेटल्प" परियोजना के तहत् पहाड़िया समुदाय को बरबट्टी की खेती हेतू प्रोत्साहित करने के लिए तालदंगाल ग्राम में कुल १८ परिवारों को जोड़ा गया, जिसमें विशु पुजहर भी एक था। परियोजना से मदद के रूप में उसे एक्सपोजर हेतू गोड्डा भी लेकर जाया गया, जहाँ वह जे टी डी एस द्वारा आयोजित प्रमंडलीय स्तर के कार्यशाला में हिस्सा लियाए।कार्यशाला से वापस आकर उसमें बरबट्टी की खेती को लेकर एक नई उत्साह का संचरण हुआ। खेती के समय उसे परियोजना से क्षेत्र की झाड़ी सफाई की मजदूरी के लिए कुल ३,०००/– रूपये एवं बीज क्रय करने हेतू ३,०००/– रूपये की मदद दी गयी। सहयोगी संस्था द्वारा तकनिकी प्रशिक्षण के साथ – साथ ऊपज को कीड़े–मकोड़े से बचाव हेतू आवश्यक जानकारी के साथ दवाई भी उपलब्ध कराया गया ,साथ ही दवा के छिडकाव हेतू स्प्रे–मशीन भी उपलब्ध कराया गया। विशु द्वारा इस मौके का भरपूर फायदा उठाकर वर्ष २०१८ में लगभग १.५ एकड़ क्षेत्र में बरबट्टी की खेती की गयी, लेकिन इस वर्ष मौसम अनुकूल नहीं रहने के कारण उसे उम्मीद अनुसार ऊपज नहीं मिल पाया, इस वर्ष उसे कुल ५.५ क्विंटल ऊपज प्राप्त हुआ। लेकिन इस वर्ष उसे महाजन से कर्ज लेने की जरुरत नहीं पड़ी, नतीजा हुआ की वह अपने ऊपज का ५ क्विंटल बाहर के व्यापारियों को बेचा, जिससे उसे लगभग २५,०००/– रूपये की आमदनी हुई। इस सफलता से विशु पुजहर बहुत ही उत्साहित हुआ। वर्ष २०१९ में पुनः विशु द्वारा लगभग २.५ एकड़ में बरबट्टी की खेती कर लगभग १३ क्विंटल बरबट्टी का उत्पादन किया गया। अबतक विशु पुजहर १० क्विंटल बरबट्टी बिक्री कर लगभग ४०,०००/– रूपये की आमदनी प्राप्त कर बहुत ही खुश है। उसके इस सफलता से बाकी पहाड़िया समुदाय के परिवारों में भी बरबट्टी की खेती को लेकर एक आशा की किरण दिखलाई पड़ने लगा है।

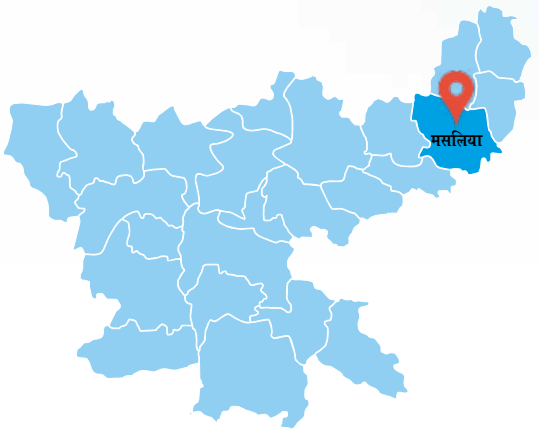

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

विशु के परिवार को अब जीवन दृयापन के लिए किसी महाजन से कभी भी पिछले दो वर्षों में ऋण लेने की आवश्यकता नहीं पड़ी है। अब वह खेती को अपना मुख्य पेशा बनाकर अपना एवं अपने परिवार का जीवन सँवारना चाहता है। इस वर्ष बरबट्टी की बिक्री से प्राप्त आय से ही विशु ने तीन बकरियाँ भी खरीद कर बकरी पालन भी प्रारम्भ कर दिया है।

शीर्षक/कार्य : बरबट्टी की खेती

लाभार्थी का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
धर्मी पहाडीन	गड़ियामु	दुमरिया	बोआरीजोर	गोड्डा

01 पुर्व की स्थिति

गड़ियामु गाँव मुख्य सड़क से 15 KM कि दूरी पर हैं। यह गाँव जाने के लिए मोहनपुर से भाया भलगोड़ा दुमरिया के रास्ते में हैं। इस गाँव में 41 परिवार निवास करते हैं जिसमे सभी PVTG परिवार हैं। यहाँ के किसान करीब 15–20 वर्षों से बर्बट्टी कि खेती करते आ रहे हैं। उसमें से एक परिवार के लाभूक जिनका नाम धर्मी पहाडीन पति देवा पहाड़ीय हैं। इस परिवार का कुल 7 सदस्य हैं। धर्मी पहाडीन का कहना है की बर्बट्टी खेती हमलोग महाजन से कर्जा लेकर करते थे। महाजन से अनुबंध ये होता था की बर्बट्टी के उपजा होने पर ऋण राशि का वापसी में बर्बट्टी महाजन को ही दोगुना देना पड़ता था । बरबत्ति का खेती करने से किसी तरह का लाभ नहीं होता था क्योंकि महाजन से इस तरह से बंधे थे की महाजन के अलावा बर्बट्टी किसी और को नहीं बेच सकते थे। उनकी आर्थिक स्थिति दिन प्रति दिन कमजोर होते जा रही थी।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

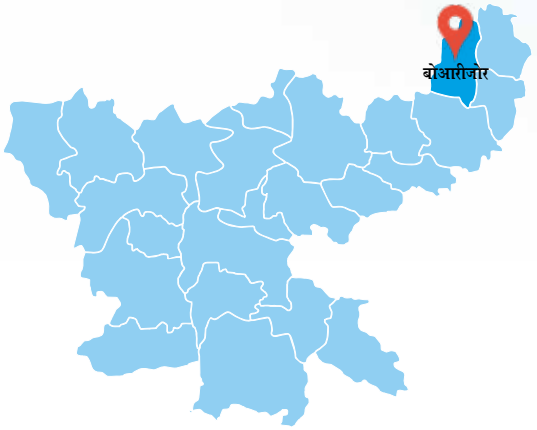

धर्मी पहाडीन का कहना है कि 2018 से JTDS के द्वारा सहयोग राशि दिया जा रहा है तब से उनके आर्थिक स्थिति बेहतर हुआ है। इस साल भी परियोजना से सहयोग राशि मिला है जिसकी मदद से उसने 100 kg बीज लगभग 4 बीघा मे लगाया था जिसका कुल उत्पादन लगभग 400 kg हुआ हैं। जिसमें से 100 KG बर्बट्टी को 40 रुपया के दर से गाँव के बगल स्थानिये डुमरिया हाट मे बेचा। जिसका कुल राशि 4000 रुपया हुआ, 10 KG लगभग अभी तक खाने में प्रयोग किए, 150 ाह बीज अगले साल खेती के लिए रखेंगे और शेष 140 kg में से कुछ खाएँगे और कुछ बेच देंगे। धर्मी पहाड़िन का कहना हैं कि अब महाजन को बर्बट्टी वापस नहीं देना पड़ता हैं। अब जो भी बर्बट्टी का राशि होता है उस पर स्वयं का अधिकार है। उस बर्बट्टी को अपने इच्छा अनुसार जरूरत परने पर व्यापरी को या स्थानिये हाट में बेचते है। उस राशि को वो अपने आवश्यकता अनुसार खर्च करते है, जैसे कपड़ा, बच्चो की पढ़ाई, घर की राशन, पर्व–त्योहार, बर्तन इत्यादि। धर्मी पहाडीन का कहना है की अब उसका परिवार परियोजना की मदद से महाजन से मुक्त हो गया है। JTDS के इस सहयोग धर्मी पहाडीन और इनके पूरे परिवार बहुत ही खुश हैं तथा इस सहयोग के लिए JTDS को धन्यवाद व्यक्त की।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

धर्मी पहाड़िन का कहना हैं कि यहाँ पर जंगली जानवर जैसे बंदर, जंगली सूअर, नील गाय इत्यादि के द्वारा बर्बट्टी फसल अधिकतर नष्ट हो जाता हैं। दिन में तो ग्रामीण के द्वारा बचाया जाता है परंतु रात में फसल का देखभाल नहीं हो पाता है जिसके कारण बर्बट्टी फसल का उपज प्रभावित होता है। धर्मी पहाडीन का कहना हैं कि भविष्य मे जंगली जानवर से फसल को अधिक से अधिक बचाने के लिए मजबूत घेराबंदी करने का प्रयास करेंगे और अगले साल अगर परियोजना से मदद नहीं भी मिलेगा तो भी वो 150 ाह बीज लगभग 6 बीघा मे बर्बट्टी की खेती करेंगे। इस गाँव में परिवहन कि सुविधा ठीक नहीं होने के कारण बाज़ार के अपेक्षा गाँव मे कम दर पर बर्बट्टी को बेचना पड़ता है। आगे से ये लोग बाज़ार मे ही जाके बेचेंगे जिससे बर्बट्टी का उचित दाम मिल सके और आमदानी में बढ़ोतरी हो सके जिससे आगे और अधिक बर्बट्टी कि खेती कर सके। साथ ही इनके परिवार का कहना है कि JTDS के सहयोग राशि से हमलोग आत्मनिर्भर हुए और अब महाजन से हमेशा के लिए छुटकारा मिल गया।

शीर्षक/कार्य : बरबट्टी की खेती

लाभार्थी का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
मंगली पहाडीन	गड़ियामु	दुमरिया	बोआरीजोर	गोड्डा

01 पुर्व की स्थिति

गड़ियामु गाँव मुख्य सड़क से 15 KM कि दूरी पर हैं द्य यह गाँव जाने के लिए मोहनपुर से भाया भलगोड़ा दुमरिया के रास्ते में हैं। इस गाँव में 41 परिवार निवास करते हैं जिसमे सभी PVTG परिवार हैं। यहाँ के किसान करीब 15–20 वर्षो से बर्बट्टी कि खेती करते आ रहे हैं। उसमे से एक परिवार के लाभूक जिनका नाम मंगली पहाडीन पति स्व० देवेंद्र पहाड़ीय हैं। इस परिवार का कुल 4 सदस्य है। मंगली पहाडीन का कहना है की बर्बट्टी खेती पति जब ज़िंदा थे तब करते थे क्योंकि खेती की निगरानी करने वाला पति ही थे। पति के गुजर जाने के बाद 2–3 साल से बर्बट्टी खेती आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण नहीं हो पाया है और महाजन भी घर की स्थिति ठीक नहीं होने के कारण बर्बट्टी खेती के लिए ऋण देने से मना कर दिया। इस कारण से परिवार का भरण पोषण और साल भर के लिए खाने के लिए भी पर्याप्त भोजन नहीं हो पा रहा था और गाँव मे मजदूरी करने का भी कोई श्रोत नहीं था। कभी कभी खेतीहर मजदूरी के रूप मे 25–30 रुपया का मजदूरी गाँव मे माह मे 15 दिन के लिए मिल जाता था जिससे परिवार का किसी तरह खाने पीने का व्यवस्था हो पाता था। अत्यंत ही गरीबी की स्थिति मे परिवार का पालन पोषण हो रहा था।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

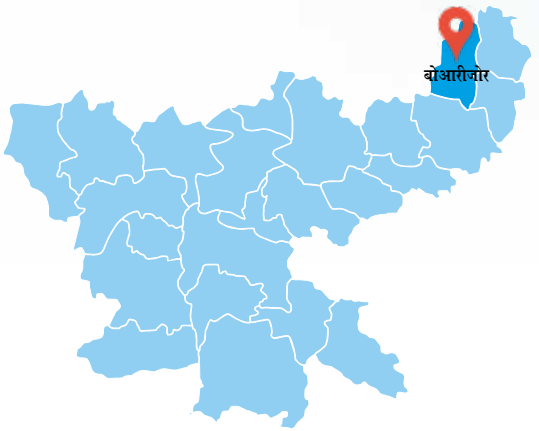

मंगली पहाडीन का कहना है कि 2018 मे बर्बट्टी खेती के लिए JTDS के द्वारा सहयोग राशि दिया गया था जिससे उसने 2 बीघा मे 40 ाह बीज से बर्बट्टी खेती शुरू की। 2018 में लगभग 200 kg का उपज हुआ। जिसमे से 80 kg अगले साल की खेति के लिए बीज के रूप मे रखा तथा 100 kg स्थानिय हाट मे 35 रुपया के दर से बेचा था जिसका कुल राशि 3500 रुपया हुआ, 20 KG लगभग खाने में प्रयोग किया। और फिर 2019 मे बर्बट्टी खेती हेतु JTDS के तरफ से पुनः मंगली पहाडीन को सहयोग राशि मिला। जिससे इस साल 100 kg लगभग 5 बीघा मे बर्बट्टी की खेती किया। उपज की रूप मे इस साल बर्बट्टी से लगभग 450 kg का उत्पादन हुआ जिसमे से 200 kg स्थानिय हाट मे 40 रुपया के दर से बेचकर कुल 8000 रुपया का कमाई किया। 100 kg अगले साल के लिए बीज के रूप मे रखा एवं 50 kg खाने के लिए रखा। 100 kg बर्बट्टी ज़रूरत के हिसाब से बेचेंगे। मंगली पहाडीन का कहना हैं कि अब बर्बट्टी उत्पादन से जो आमदनी हुई है उस से उसके घर का स्थिति मे कुछ सुधार हुआ है और वो अब उस राशि से घर के खाने पीने का राशन, बच्चों के लिए कपड़े और अपने ज़रूरत के अनुसार खर्च कर रही है। धर्मी पहाड़ीन का कहना है की अब उसका परिवार परियोजना की मदद से बहुत खुश हैं तथा इस सहयोग के लिए JTDS को धन्यवाद व्यक्त की।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

मंगली पहाडीन का कहना हैं कि यहाँ पर जंगली जानवर जैसे बंदर, जंगली सूअर, नील गाय इत्यादि के द्वारा बर्बट्टी फसल अधिकतर नष्ट हो जाता हैं। दिन मे तो ग्रामीण के द्वारा बचाया जाता है परंतु रात में फसल का देखभाल नहीं हो पाता है जिसके कारण बर्बट्टी फसल का उपज प्रभावित होता है। मंगली पहाडीन का कहना हैं कि भविष्य मे जंगली जानवर से फसल को अधिक से अधिक बचाने के लिए मजबूत घेराबंदी करने का प्रयास करेंगे और अगले साल अगर परियोजना से मदद नहीं भी मिलेगा तो भी वो 100 kg बीज लगभग 5 बीघा मे बर्बट्टी की खेती करेंगे। इस गाँव में परिवहन कि सुविधा ठीक नहीं होने के कारण बाज़ार के अपेक्षा गाँव मे कम दर पर बर्बट्टी को बेचना पड़ता है। आगे से ये लोग बाज़ार मे ही जाके बेचेंगे जिससे बर्बट्टी का उचित दाम मिल सके और आमदानी में बढ़ोतरी हो सके जिससे आगे और अधिक बर्बट्टी कि खेती कर सके। साथ ही इनके परिवार का कहना है कि JTDS के सहयोग राशि से हमलोग आत्मनिर्भर हुए हैं और घर की आर्थिक स्थिति मे भी सुधार हई है।

शीर्षक/कार्य : बरबट्टी खेती महाजन मुक्ति

लाभार्थी का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
मागी पहाड़िन	भटभंगा पहाड़	भटभंगा संथाली	तालझारी	साहिबगंज

01 पुर्व की स्थिति

बर्बट्टी खेती का कोई मान्यता एवं पहचान नहीं था। बर्बट्टी की खेती पारंपरिक विधि से की जाती थी। पूरी खेती महाजन पर निर्भर करता था। महाजन से जितना लोन मिला उसी के अनुसार खेती का आच्छादन होता था। पूरा पहाड़िया समाज महाजन से बंध चुका था। बर्बट्टी खेती के बाद बर्बट्टी की बिक्री महाजन से करना अनिवार्य था। इस नियम का उलंघन करने वाले को आर्थिक एवं शारीरिक दंड भी भुगतना पड़ता था। महाजन का ब्याज दर डेढ़ गुना होता था। सभी परिवार खेती तो करते थे लेकिन कभी– कभी खाने के लिए भी बर्बट्टी घर में नहीं बचता था। कभी – कभी घर का कीमती समान गिरवी रखकर खेती के लिए लोन मिलता था। आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण पूरा परिवार कर्ज की बोज से दबा हुआ था। जानकारी के अभाव में बीमारी लगने से बहुत अधिक क्षति होती थी। किसी प्रकार की कोई जागरूकता कार्य नहीं होता था। प्रति एकड़ उपज भी कम होता था।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

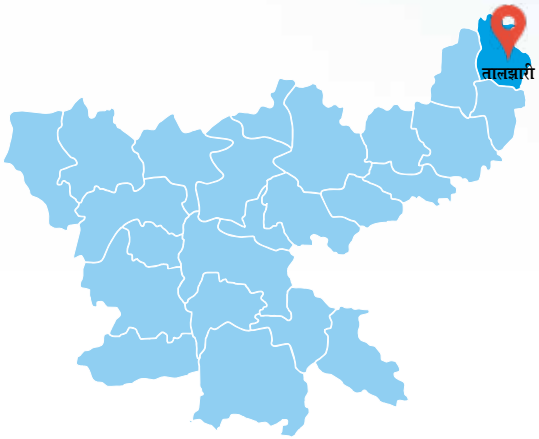

परियोजना सहयोग के बाद से बर्बट्टी की खेती को एक पहचान मिली है। सरकार तथा लोग पहाड़िया समुदाय को किसान मानने लगे है। गाँव स्तर पर मिले प्रशिक्षण से खेती के तरीकों में परिवर्तन से फसल आच्छादन में वृद्धि हुई है। गाँव स्तर पर स्थानीय संसाधन से कीटनाशक के इस्तेमाल पर जोड़ दिया गया। परियोजना से प्रति लाभुक समय पर बीज, मजदूरी कीटनाशक के लिए सहायता दी गयी। सममय खेती के लिए प्रेरित किया गया। बर्बट्टी को मान्यता मिले इसके लिए जन जागरूकता किया गया। बर्बट्टी की बिक्री उचित कीमत पर हो इसके लिए बाजार पर कार्य किया गया। बर्बट्टी बिक्री के समय को परिवर्तित किया गया। बर्बट्टी खेती के लिए किसान को प्रशिक्षण दिया गया।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

परियोजना सहयोग से बर्बट्टी खेती ने महाजन से मुक्ति दिलाई है साथ महाजन अत्याचार से छुटकारा मिली। दिल में महाजन कर डर समाप्त हुआ है। बर्बट्टी खेती का रकवा बढ़ा है। अपनी जरूरत के अनुसार जब चाहे, जहां चाहे बर्बट्टी की बिक्री कर सकता है। बर्बट्टी तकनीकी ज्ञान से कीड़ा मकोड़ा के प्रकोप में कमी से उपज में वृद्धि हुई है। घर में पूरे वर्ष बर्बट्टी खाने के लिए मिलने लगा है। सामाजिक परिवेश में रहन सहन के स्तर में वृद्धि हुई है। बच्चों के पढ़ाई तथा परिवार के लोगों के दवाई में सहयोग मिल रहा है। एक ही समय में पूरा बर्बट्टी बेचने से छुटकारा मिला है। बच्चे विध्यालय जाने लगे है। एक कपड़ा से कम चलाने वाला परिवार आज दो से तीन कपड़े पहनने लगा है। आत्मनिर्भरता में वृद्धि हो रही है। घर का सामान गिरवी रखने से मुक्ति मिल गयी है। पति पलायन के समय में कमी। समूह बचत करने में आसानी हो गयी है।

भविष्य की योजनारू–

बर्बट्टी बजरीकरण कर अधिक कीमत की तलाष
स्थानीय संसाधन से कीटनाषक का निर्माण
बर्बट्टी भंडारण के लिए की व्यवस्था
बर्बट्टी किसान का पंचायत एवं प्रखण्ड स्तरीय समूह निर्माण
बर्बट्टी खेती का बीमा
बर्बट्टी खेती आच्छादन में वृद्धि

शीर्षक/कार्य : बरबट्टी की खेती कर धनोपार्जन करना

लाभार्थी का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
समाई देहरी	धुंधापहाड़ी	कुश्चिरा	गोपीकांदर	दुमका

01 पुर्व की स्थिति

JTDS से जुड़ने से पूर्व समाई देहरी की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। जीविकोर्पाजन के लिए मूलभूत सुविधाओं का घोर अभाव था। समाई देहरी अपनी रोजमर्रा की जिंदगी के लिए महाजन से कर्ज लेता था, एवं उस कर्ज के लिए समय के अनुसार अधिक समय होने पर बहुत ही ज्यादा ऋण एवं ब्याज देना पड़ता था। स्थितियाँ इतनी विकट थी कि जीविकोपार्जन बहुत ही परेशानी से संभव हो पाता था। कुछ बचत नहीं हो पाता थी, इसी लिए खाने पीने में बहुत ही परेशानी होती थी।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

JTDS से जुड़ने के बाद JTELP परियोजना अर्तगत विभिन्न प्रकार आय सृजन गतिविधियों से जुड़ने का मौका मिला। JTDS के कर्मियों ने आय–सृजन गतिविधि के तहत बरबट्टी उत्पादन पर विशेष जोड़ दिया। जब से इस गांव में JTDS के द्वारा JTELP परियोजना का सफल क्रियान्वयन शुरू किया गया है। तब से बरबट्टी का पैसा 6,000.00 रूपये एवं कृषि प्रशिक्षण प्राप्त कर धन का अर्जण किया जा रहा है। आज समाई देहरी ने 20 के0जी0 लगा कर 100 के0जी0 का उत्पादन प्राप्त किया है। आज गांव में सभी लोग समाई देहरी का पूरा सम्मान करते है।

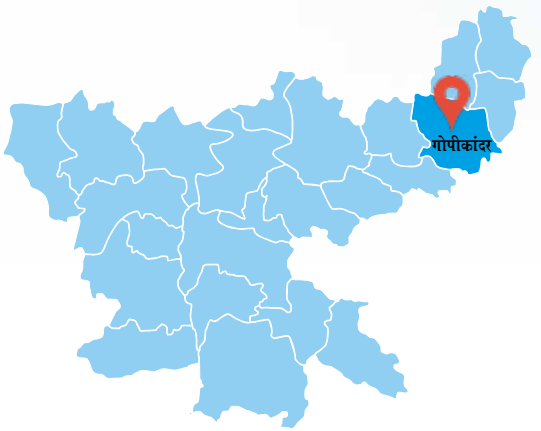

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

महाजनों से छुटकारा पा कर बरबट्टी खेती कर समाई देहरी ज्यादा से ज्यादा लाभ कमा कर प्रगति के पथ पर अग्रसर होता हुआ चला जा रहा है। छोटी–छोटी जरूरतो एवं परेशानियों से ऊपर उठकर आज समाई देहरी आनंद से जी रहा है। एक समय था पैसे के अभाव में वह खेती भी नहीं कर पाता था एवं घुट–घुट के जीने के लिए मजबुर था। अतः बरबट्टी से प्राप्त पैसे से वह एक किराना दुकान खोलना चाहता है। कोई कारण नहीं कि एक समय समाई देहरी अपना एक अलग स्थान बनाने में सफल होता हुआ चला जायेगा।

शीर्षक/कार्य : बरबट्टी की खेती कर धनोपार्जन करना

लाभार्थी का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
अलोका देवी	गडद्वारा	हथियापाथर	मसलिया	दुमका

01 पुर्व की स्थिति

मसलिया प्रखंड के हथियापाथर पंचायत के गडद्वारा ग्राम के अलोक देवी पति –चतुर पुजहर चार बच्चों के साथ बहुत ही दयनीय स्थिति में अपने परिवार का भरण–पोषण करती थी। पति–पत्नी मिलकर दिन में दो बार पहाड़ से सुखी लकड़ियाँ लाकर दुसरे गांव में बेचकर प्रतिदिन 75 से 100 रूपये नगद आमदनी करती। महाजन से प्रत्येक साल दो से तीन हजार ऋण लेकर बरबट्टी की खेती करती। लगभग 1 बीघा में बरबट्टी लगाती, जिससे उसे डेढ़ से दो क्विंटल बरबट्टी का ऊपज प्राप्त होता। उसमें से महाजन के पास ही लगभग डेढ़ क्विंटल बरबट्टी बेचकर ऋण एवं ब्याज का पैसा चुकता करती। इस प्रकार उसके पास बरबट्टी उत्पादन से कोई खास आमदनी नहीं होता, जो थोड़ा बहुत बचता वह उसे स्वयं के परिवार के उपयोग के लिए रखती थी।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

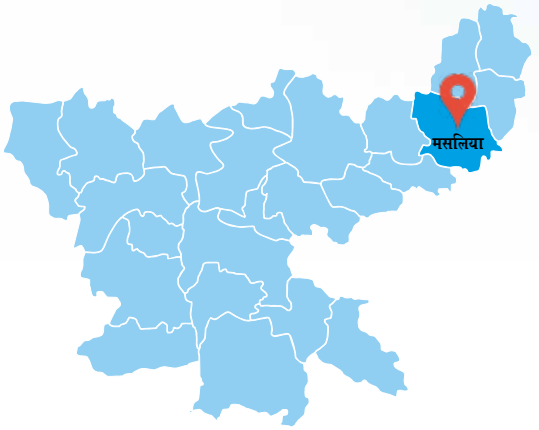

वर्ष 2018 में अलोक देवी परियोजना से जुड़कर बरबट्टी की खेती लगभग 1 एकड़ क्षेत्र में बरबट्टी की खेती की, जिसमें दसे परियोजना से 50 किलो बीज के साथ–साथ झाड़ी सफाई के लिए 3,000/– का आर्थिक मदद भी मिला। यही नहीं उसे परम्परागत तरीके से हटकर बरबट्टी की खेती का गुर परियोजना कर्मियों द्वारा सिखलाया गया। समय पर आर्गेनिक दवा एवं स्प्रे–मशीन भी उसे उपलब्ध कराया गया। नतीजा यह हुआ कि इस साल अलोका देवी ने लगभग 5.5 क्विंटल बरबट्टी का ऊपज प्राप्त किया एवं निकट के हाट में लगभग 5 क्विंटल बरबट्टी बिक्री कर लगभग 25000/– का अच्छी आमदनी प्राप्त करने में सफलता पायी, जिसका सारा श्रेय वह जेटीडीएस को देती है। अलोका देवी का कहना है कि जेटीडीएस ने उसके जीवन में एक नई रौशनी का संचरण किया है, जिसका लाभ वह आने वाले वर्षो में और ज्यादा उठाएगी।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

वर्ष 2019 में परियोजना के तहत् प्राप्त मदद से गद्द्वारा गांव के 18 पहाड़िया परिवारों में बहुत खुशी का भाव जागृत हुआ है, अगले वर्ष वे सभी और अधिक मात्रा में बरबट्टी की खेती कर अपनी आमदनी बढ़ाना चाहते है। अब चुंकि उन्हें पैसे के लिए महाजन के पास हाथ फैलाना नहीं पड़ता, जिसका नतीजा है कि पुरे ऊपज को इनके द्वारा बाजार में अच्छे दर पर बेचकर बढ़िया नगद आय प्राप्त हो रहा है। अलोका का कहना है कि अब वह बरबट्टी के साथ–साथ मकई, ज्वार, बाजरा की भी खेी कर अधिकर लाभ कमाना चाहती है।

शीर्षक/कार्य : बरबट्टी की खेती कर धनोपार्जन करना

लाभार्थी का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
फूलचंदर पुजहर	गोलपुर	गोलबंधा	मसलिया	दुमका

01 पुर्व की स्थिति

मसलिया प्रखंड के गोलबंधा पंचायत के गोलपुर ग्राम के फूलचंद पुजहर दो बच्चों एंव पत्नी के साथ बहुत ही मुश्किल हालात में गुजर–बसर करता था। उसके पास खेती का कोई जमीन नहीं होने के कारण वह खेती भी नहीं करता था। गांव के जंगलों से लकड़ी एवं पत्ता चुनकर जमा करता एवं नजदीक के हाट में बिक्री कर अपने जरूरत के अन्य चीजों का जुगाड़ करता था। कुल मिलाकर उसकी जिन्दगी मुश्किलों भरा था।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

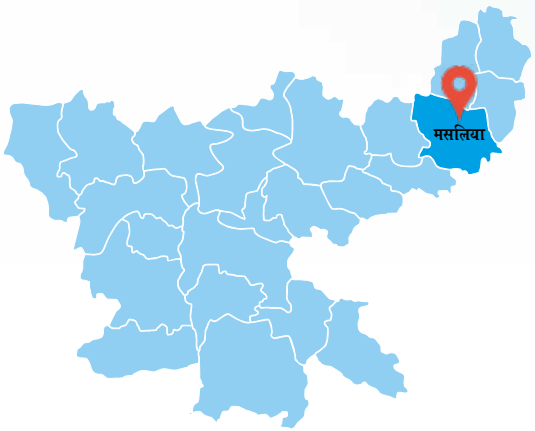

वर्ष 2018 में जब से जेटीडीएस के तहत् पहाड़िया समुदाय को बरबट्टी की खेती से जोड़ने की बात उसके गांव में की गई तो इस गांव में कुल 12 पहाड़िया परिवारों ने इसे सिरे से खारिज कर दिया। सहयोगी संस्था के कर्मियों ने जब कारण जानने हेतु समुदाय के लोगों से चर्चा की तो पता चला कि सभी परिवार अन्धविश्वास के कारण कि अगर पहाड़ पर खेती करेंगे तो पहाड़ का देवता मानव का बलि लेगा, अन्यथा हमारे समुदाय में कोई न कोई बड़ी मुसीबत आ खड़ी हो जाएगी। नतीजा वर्ष 2018 उमें एक भी परिवार द्वारा वहां बरबट्टी की खेती नहीं कराई जा सकी। सहयोगी संस्था के कर्मी ग्राम के ही सीआरपी एवं पंचायत के सीऍफ के साथ लगातार उनका भ्रम दूर करने के लिए उनके साथ बैठके आयोजित की। उन्हें संथाल परगना के अन्य पहाड़िया समुदाय द्वारा इस दिशा में की जा रही गतिविधियों से अवगत कराया, बरबट्टी खेती से होने वाले लाभ का समझाया, तव जा कर वर्ष 2019 में इस ग्राम के 12 परिवारों द्वारा इस वर्ष बरबट्टी खेती करने की सहमति जताई गई। परियोजना के तहत् उन्हें प्रशिक्षण देकर आर्थिक मदद के रूप में मजदुरी एवं बीज हेतु कुल 6000/– रूपये दिये गये। फुलचंद पुजहर ने पुरे मनोयोग से लगभग 1 एकड़ क्षेत्र में बरबट्टी की खेती की एवं लगभग 3.5 क्विंटल बरबट्टी का पैदावार प्राप्त किया। उसमें से वह लगभग 6 क्विंटल बरबट्टी की बिक्री नजदीक के व्यापारियों को कर लगभग 15000/– का नकद आय पाकर अत्यंत खुश है।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

अब वह प्रत्येक वर्ष बरबट्टी की खेती कर अपना माली हालत सुधारना चाहता है। साथ ही वह इस वर्ष अर्जित पैसों से 5 बकरी खरीद कर बकरी पालन कर अतिरिक्त आमदनी प्राप्त करना चाहता है। ग्राम के सभी पहाड़िया समुदाय अब अगले वर्ष और अधिक मात्रा में बरबट्टी की खेती कर नकद मुनाफा कमाने की इच्छा रखते हैं।

शीर्षक/कार्य : बरबट्टी की खेती कर धनोपार्जन करना

लाभार्थी का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
रामेश्वर गृही	गुम्मापहाड़ी	कुश्चिरा	गोपीकांदर	दुमका

01 पुर्व की स्थिति

JTDS से जुड़ने से पूर्व रामेश्वर गृही की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। जीविकोर्पाजन के लिए मूलभूत सुविधाओं का घोर अभाव था। भोजन, वस्त्र, आवास के लिए मुद्रा का अर्जन करना अत्यंत कठिन मालूम होता था। रोजगार के अभाव में विभिन्न राज्यों में जा कर धनार्जन करना पड़ता था। विकट परिस्थितियों में जीवन को चलाना अत्यंत मुश्किल था।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

ग्राम गुम्मापहाड़ी में JTDS की परियोजना JTELP अर्थात् झारखंड आदिवासी सशक्तिकरण एवं आजीविका परियोजना से जुड़ने के बाद बहुत सारी मदद मिली। JTDS के लोगों ने बरबट्टी की खेती के लिए पारंपरिक विधि बताई। बरबट्टी की खेती के लिए 6,000.00 रूपये की सहायता राशि दी गई। इन रूपयों से बरबट्टी के बीजों को खरीद कर खेतों में लगाया। सही ढंग से बीजों का रोपण होने से ज्यादा से ज्यादा आय होने लगी। अधिकाधिक आय सृजन से जीवन की परेशानियां धिरे–धिरे कम होने लगी।

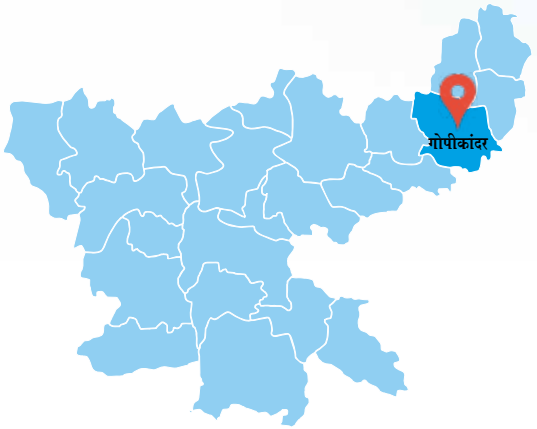

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

रामेश्वर गृही कहते है कि बरबट्टी की खेती करने से हमारे घर की आर्थिक स्थिति मे काफी सुधार हुआ। आने वाले समय में अधिक से अधिक बरबट्टी की खेती को किया जायेगा। अधिक बरबट्टी की खेती करने से अच्छी आमदनी होती है। कृषि कार्य के लिए पैसे बचा कर 2 जोड़ा बैग का क्रय किया गया। सिंचाई के लिए पंप सेट को खरीदा गया। रहने के लिए भविष्य में नये घरों का निर्माण किया जायेगा। पैसे को बचा कर नये–नये कृषि यंत्रो का क्रय किया जायेगा। अभी इनका जीवन अत्यंत खुशहाल है। जीवनस्तर ऊंचा उठता हुआ चला जा रहा है।

शीर्षक/कार्य : बरबट्टी की खेती कर धनोपार्जन करना

लाभार्थी का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
सोमलाल लैया	जानुमडीह	मुसना	गोपीकांदर	दुमका

01 पुर्व की स्थिति

JTDS से जुड़ने से पूर्व सोमलाल लैया की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। जीविकोर्पाजन के लिए मूलभूत सुविधाओं का घोर अभाव था। भोजन, वस्त्र, आवास के लिए मुद्रा का अर्जन करना अत्यंत कठिन मालूम होता था। रोजगार के अभाव में विभिन्न राज्यों में जा कर धनार्जन करना पड़ता था। विकट परिस्थितियों में जीवन को चलाना अत्यंत मुश्किल था।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

JTDS से जुड़ने के बाद JTELP परियोजना अर्तगत विभिन्न प्रकार आय सृजन गतिविधियों से जुड़ने का मौका मिला। मुख्य रूप से गांव की महिलाओं एवं किसानों को खेती–बाड़ी के लिए विभिन्न विधियों को बताया गया। जानकारी प्राप्त होने के कारण अच्छी खेती होने से उचित मात्रा में लाभ प्राप्त हो रहा है। 6,000.00 रूपये नगद JTDS, दुमका से प्राप्त हुआ। बरबट्टी की खेती करने से वस्त्र, खटिया एवं बच्चे का नामांकन करवाया गया। JTDS के कर्मियों ने आय–सृजन गतिविधि के तहत बरबट्टी उत्पादन पर विशेष जोड़ दिया।

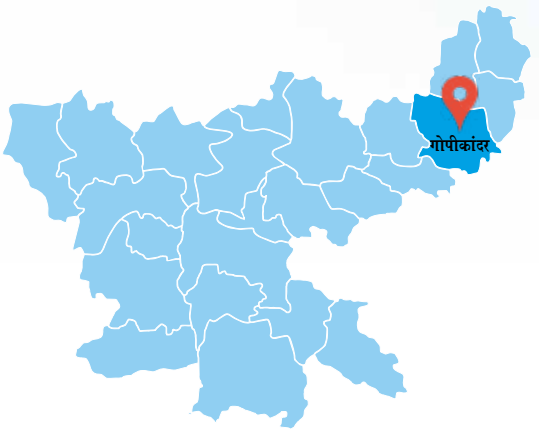

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

JTDS से जुड़ाव के बाद सोमलाल लैया ने 25 के0जी0 बरबट्टी के बीज लगा कर, कुछ समय अन्तराल के बाद 150 के0जी0 बरबट्टी का उत्पादन प्राप्त किया है। सोमलाल लैया कहते है कि बरबट्टी की खेती करने से हमारे घर की स्थिति में काफी सुधार आया है। आजीविका का साधन एवं आने वाले समय में बरबट्टी की कृषि वरदान साबित हो रही है। जीवन खुशहाल एवं समुन्नत है।

शीर्षक/कार्य : बरबट्टी की खेती कर धनोपार्जन करना

लाभार्थी का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
सुनाराम कुँवर	जोलो	गोपीकांदर	गोपीकांदर	दुमका

01 पुर्व की स्थिति

JTDS से जुड़ाव के पूर्व लोगों में शिक्षा एवं जानकारी का घोर अभाव था। शिक्षा के अभाव में बरबट्टी की खेती कम मात्रा में एवं सही तरीके से नहीं हो पाती थी। गांव के लोग रोजगार के अभाव में पलायन भी करते थे। यह लाभूक सुनाराम कुँवर की स्थिति काफी दयनीय थी। इनके पास आजीविका कोई साधन भी नहीं था। कृषि प्रशिक्षण के अभाव में खेती–बाड़ी का भी बहुत अच्छा अनुभव नहीं था। इनकी स्थिति काफी कमजोर थी।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

JTDS से जुड़ने के बाद JTELP परियोजना अर्तगत विभिन्न प्रकार आय सृजन गतिविधियों से जुड़ने का मौका मिला। सभी ग्रामीणों को बरबट्टी खेती के लिए राशि एवं कृषि प्रशिक्षण दिया गया। दी गई राशि एवं प्रशिक्षण से सुनाराम कुँवर ने एक अच्छे कृषक की तरह कार्य करने शुरू कर दिया। अच्छी कृषि के कारण ऊपज भी अच्छी हुई। धीरे–धीरे आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरू हो गया। आज सुनाराम कुँवर आर्थिक रूप से सक्षम हो गया है।

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

बरबट्टी के लिए प्राप्त राशि एवं कृषि प्रशिक्षण प्राप्त कर सुनाराम कुँवर एक अच्छी खेती कर आत्मर्निभर हो चुका है। कभी जो आदमी दाने–दाने के लिए मोहताज था, आज वह श्रज्वै से मदद पा कर कृषि कार्य कर धनोपार्जन कर अपने जीवन क्षेत्र में उत्तरोत्तर तरक्की करता जा रहा है। लुप्त प्रायः होने वाली गरीब आदिवासी जनता के लिए बरबट्टी की सहयोग राशि एक वरदान साबित हो रही है। आत्मनिर्भरता प्राप्ति एवं आत्मविश्वास में वृद्धि से जीवनस्तर काफी उच्च कोटि का होता हुआ चला जायेगा, यही भविष्य की योजना है।

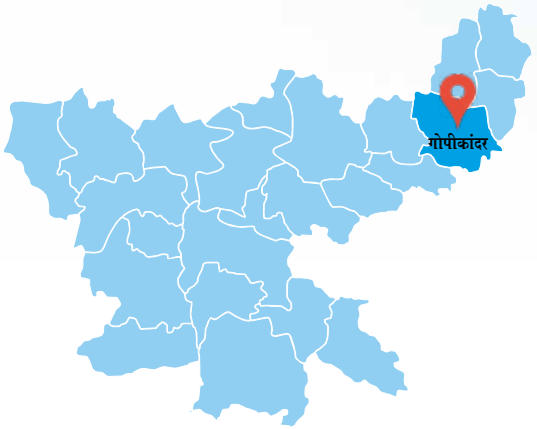

शीर्षक/कार्य : बरबट्टी की खेती कर धनोपार्जन करना

लाभार्थी का नाम	गांव	पंचायत	प्रखंड	जिला
सुनिता देवी	तालडंगाल	कोलारकोंदा	मसलिया	दुमका

01 पुर्व की स्थिति

झारखंड के दुमका जिला के मसलिया प्रखंड के कोलारकोंदा पंचायत के अन्तर्गत ग्राम तालडंगाल में सुनिता देवी अपने पति एवं दो बच्चों के साथ गरीबी एवं लाचारी की अवस्था में अपना जीवन व्यतीत कर रही थी। आजीविका का कोई जरिया नहीं होने के कारण सुनिता एवं उसका परिवार जंगलों से जलावन की लकड़ियां काटकर उसे निकट के हाट–बाजारों में बिक्री कर घर का गुजारा करते एवं बीज–बीच में अगल–बगल के गांवों में कभी–कभार मजदूरी कर कुछ आमदनी प्राप्त करते। गरीबी के कारण पूरे परिवार का स्वास्थ्य बहुत चिन्ताजनक था। बच्चे अक्सर बीमारियों के चपेट में आसानी से आ जाते, जिस कारण वे नियमित विद्यालय भी नहीं जाते थे। बरबट्टी खेती के मौसम में यह परिवार महाजन से ऋण के रूप में 4–5 हजार कर्ज एवं बीज लेकर पारंपरिक विधि से बरबट्टी की खेती लगभग एक बीघा में करते, लेकिन ऊपज का अधि ाकांश हिस्सा वे महाजन का कर्ज एवं सूद जो लगभग एक बीघा में करते, लेकिन ऊपज का अधिकांश हिस्सा वे महाजन का कर्ज एवं सूद जो लगभग दुगुना होता, वापस करने में ही खत्म कर देते। इस प्रकार मुश्किल से इनके पास 50–60 किलो बरबट्टी महाजन को देने के बाद बचता, जिसमें से सुनीता 20–25 किलो बेचकर लगभग 1500/– रूपये आय अर्जित करती बाकी 10 से 15 किलो बरबट्टी स्वयं के खाने के लिए ही बचता।

02 JTPL परियोजना के बाद की स्थिति

वर्ष 2018 में 'जेटल्प' परियोजना के तहत् पहाड़िया समुदाय को बरबट्टी की खेती हेतू प्रोत्साहित करने के लिए तालडंगाल ग्राम में कुल 18 परिवारों को जोड़ा गया, जिसमें सुनिता देवी भी एक लाभूक के रूप मं जुड़ी। वर्ष 2018 में परियोजना के तहत् लाभूकों को प्रशिक्षण देकर बरबट्टी की खेती हेतु आर्थिक मदद किया गया, जो इस परिवार के लिए वरदान साबित हुआ। इस वर्ष सुनीता को महाजन से किसी प्रकार के कर्ज लेने की आवश्यकता नहीं पड़ी। दोनों पति–पत्नी पुरे लगन एवं म्हणत से करबी 0.50 एकड़ वन–क्षेत्र में वन–क्षेत्र में बरबट्टी की खेती किए। फसल को कीड़े–मकोड़े से बचाव हेतु इस परिवार को आर्गेनिक दवाई एवं स्प्रे–मशीन उपलब्ध कराया गया। इस वर्ष सुनीता ने लगभग 3 क्विंटल ऊपज प्राप्त किया। जिसे सहयोगी संस्था ने युवा समूहों के माध्यम से इसके ऊपज का क्रय कराया। कुल मिलकर सुनीता को इस खेती से 250 किलो बरबट्टी 45 रूपये के दर से बिक्री कर लगभग 11,250/– रूपये का नकद आय प्राप्त हुआ। इस आय को प्राप्त कर सुनीता के चेहरे में एक आत्मविश्वास का भाव जागृत हुआ। वह अब महाजन के पास चक्कर लगाने से मुक्त हो गई थी। पुनः 2019 में सुनीता एवं उसका पति दुगुने उत्साह के साथ लगभग 1.5 एकड़ में बरबट्टी की खेती कर लगभग 4.25 क्विंटल ऊपज प्राप्त करने में सफल रहा, जिसमें से वह लगभग 3.40 क्विंटल बरबट्टी स्थानीय व्यापारियों के पास बेचकर अबतक लगभग 18,000/– रूपये की आमदनी प्राप्त कर चुका है। नगद आय होने से वह अब उसका परिवार अपने बच्चों के लिए थोड़ा बेहतर खाना–पीना जुटाने में समर्थ है, सुनीता के अनुसा अब वह अपने परिवार के लिए सप्ताह में एक बार अंडा एवं मांस भी खरीद कर पकती है। कुल मिलकर उसका परिवार अब खुश नजर आता है। जेटीडीएस द्वारा संचालित कार्यक्रम की प्रशंसा भी करता है। कि जेटीडीएस ने उसके परिवार को जीने की एक राह दिखलाई है।

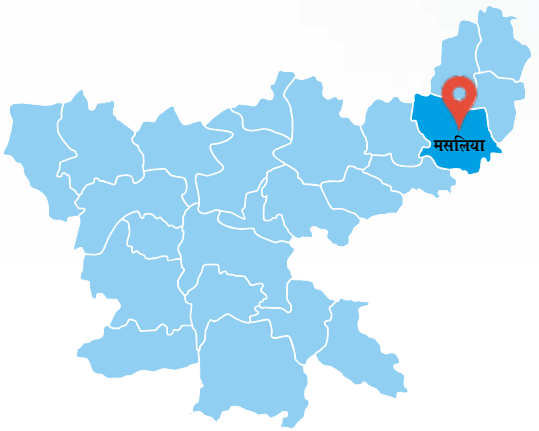

03 प्रभाव एवं भविष्य की योजना

सुनिता का कहना है कि इस वर्ष के आमदनी के कुछ हिस्से से वह 20–25 मुर्गियाँ खरीद कर मुर्गी–पालन कर इस व्यवसाय को आगे बढ़ाकर अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती है। अब यह उम्मीद की जा सकती है कि सुनिता पहले से बेहतर तरीके से जीवन व्यतीत कर रही है और भविष्य में वह महाजनों के पास हाथ नहीं फेलाईगी। वह अपने बच्चे को भी स्कुल भेज पा रही है तथा अपने जीवन को बेहतर ढंग से जी रही है।

D.A.P

झारखण्ड सरकार

JHARKHAND TRIBAL DEVELOPMENT SOCIETY

(A society of Scheduled Tribe, Scheduled Caste, Minority and Backward Class Welfare Department, Government of Jharkhand)

Dr. Ramdayal Munda Tribal Welfare Research Institute Campus,
Tagore Hill Road, Morabadi, Ranchi-834008
Website: www.jtdsjharkhand.org | E-mail: spd.jtds@gmail.com
Phone/Fax: 0651-2552088